

पद ३४१

(राग: खमाज - ताल: ध्रुमाळी)

वही जो बंदा वही जो बंदा । राह न जाने सोही गंदा । लाइलाहसे
दमकु लेके इल्लिलाहमें ठहर जाना । मुहम्मद रसूलिल्ला कहके
नबी अलीका रम्ज पाना । कौल है रसूलिल्लाका नमाज रोजा करते
रहना । अपने दीनपर कायम रहके मौतके आगे मर जाना । मानिक
सग है रसूल दरका बांध लिया गले में तागा । डोरी तो मेरी रबके
हाथ में जिधर को खींचा उधर भागा ॥१॥